

# डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ बाईस

सत्य का अनावरण: दानियेल 11 के माध्यम से एक यात्रा और परमेश्वर की प्रजा का हिलना

Jeff Pippenger

2024-03-07

जब 1989 में 'अंत के समय' दानियेल अध्याय 11 के पद 40 से 45 का प्रकाश अनावृत हुआ, तो सत्य के शत्रुओं ने ऐसा प्रतिरोध खड़ा किया, जिसके माध्यम से परमेश्वर ने दानियेल की पुस्तक के उस खंड के आधारभूत सिद्धांतों का बचाव करने के लिए सत्य प्रकट किए; और वही फिर शैतान के हमलों का विषय और केंद्र बन गए। सत्य और भ्रांति के उस इतिहास में हुए विवाद का उपयोग पवित्र आत्मा ने कुछ ऐसे भविष्यसूचक नियमों की पहचान कराने के लिए किया, जो अनावृत किए गए ज्ञान में और वृद्धि करने वाले थे और आगे चलकर पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी की परीक्षा लेने वाले थे। हम 'भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोगों' पर विचार कर रहे हैं, और इन्हें उस प्रमुख नियम के रूप में पहचान रहे हैं, जो उन दिनों शैतान द्वारा प्रस्तुत प्रतिरोध की प्रक्रिया से प्रकट हुआ था। उस विवादास्पद प्रक्रिया को सिस्टर वाइट 'हिलावट' कहती हैं।

"मेरा ध्यान उसके लोगों के बीच परमेश्वर के ईश्वरीय प्रबंध की ओर दिलाया गया और मुझे दिखाया गया कि जो अपने को मसीही कहते हैं, उन पर शुद्धिकरण और परिष्करण की प्रक्रिया से जो भी परीक्षाएँ आती हैं, वे कुछ को अपशिष्ट सिद्ध करती हैं। खरा सोना हर समय प्रकट नहीं होता। हर धार्मिक संकट में कुछ लोग प्रलोभन में गिर पड़ते हैं। परमेश्वर का हिलाना सूखे पत्तों की तरह अनेकों को उड़ा देता है। समृद्धि नामधारियों की भीड़ बढ़ा देती है। विपत्ति उन्हें कलीसिया से छानकर बाहर कर देती है। एक वर्ग के रूप में, उनकी आत्माएँ परमेश्वर के साथ दृढ़ नहीं रहतीं। वे हम में से नहीं हैं, इसलिए वे हमसे अलग हो जाते हैं; क्योंकि वचन के कारण जब क्लेश या सताव उठता है, तो बहुत से ठोकर खा जाते हैं।" गवाहियाँ, खंड 4, 89.

यह "कंपन" तब उत्पन्न होता है जब सत्य की मुहर यहूदा के गोत्र के सिंह द्वारा खोली जाती है और उसके बाद उसे प्रस्तुत किया जाता है।

मैंने उस हिलावट का अर्थ पूछा जिसे मैंने देखा था, और मुझे दिखाया गया कि यह लाओदीकियों के लिए सच्चे साक्षी के परामर्श से उत्पन्न सीधी गवाही के कारण होगी। यह उसे ग्रहण करने वाले के हृदय पर अपना प्रभाव डालेगी, और उसे ध्वज को ऊँचा उठाने तथा सीधा सत्य स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए प्रेरित करेगी। कुछ लोग इस सीधी गवाही को सहन नहीं करेंगे। वे इसके विरुद्ध उठ खड़े होंगे, और यही बात परमेश्वर के लोगों के बीच हिलावट उत्पन्न करेगी। *Early Writings*, 271.

'सत्य' का प्रस्तुत होना हमेशा हलचल पैदा करता है, और 1989 में जिस सत्य की मुहर खोली गई, उसने भी यही किया। सत्य के विरुद्ध उठे प्रतिरोध का एक लाभ यह था कि 1989 के बाद के वर्षों में ज्ञान में वृद्धि स्थापित करने के लिए नियमों का एक समूह विकसित हुआ। इन नियमों का विकास मिलेराइट काल में नियमों के एक समूह के विकास के समानांतर था। बाइबल की भविष्यवाणी के सभी त्रिगुणी अनुप्रयोग, अंतिम दिनों की घटनाओं की स्पष्टता में योगदान करते हैं।

रोम और बाबुल के त्रिविध अनुप्रयोग रविवार के कानून के संकट के इतिहास में उस स्त्री और उस पशु के बीच का संबंध स्थापित करते हैं, जिस पर वह सवार है और जिस पर वह राज्य करती है, और यही इतिहास बाबुल की वेश्या पर परमेश्वर के कार्यकारी न्याय का भी है।

'वाचा के दूत' के लिए मार्ग तैयार करने वाले 'दूत' तथा 'एलियाह' के त्रिगुण अनुप्रयोग उन दो कालखंडों में कार्य और संदेश की पहचान करते हैं जो अंतिम दिनों में अनुग्रह-काल के समापन को चित्रित करते हैं। पहला कालखंड प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के प्रथम स्वर से आरंभ होता है, जो लाओदीकियाई एडवेंटवाद के जीवितों के लिए

अन्वेषणात्मक न्याय के प्रारंभ का प्रतिनिधित्व करता है; और अंतिम कालखंड प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के द्वितीय स्वर से आरंभ होता है, जो बाबुल की व्यभिचारिणी पर दण्डात्मक न्याय का प्रतिनिधित्व करता है।

रोम और बाबुल से संबंधित तिहरे अनुप्रयोग परमेश्वर की अंतकालीन प्रजा के बाह्य इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि एलिय्याह तथा मार्ग तैयार करने वाले दूत से संबंधित तिहरे अनुप्रयोग परमेश्वर की अंतकालीन प्रजा के आंतरिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। तीन हाय के तिहरे अनुप्रयोग से उस संदेश की पहचान होती है जो दोनों कालों में चलता है और जो मिलकर न्याय के समापन काल का प्रतिनिधित्व करते हैं; यह परमेश्वर के घर से आरंभ होता है और उसके बाद उन पर होता है जो परमेश्वर के घर के बाहर हैं। ये तीन हाय यह पहचान कराते हैं कि इस्लाम अंतिम वर्षा का संदेश है, और साथ ही वह न्याय का वह साधन भी है जिसका उपयोग परमेश्वर उन पर करता है जो समस्त मानवजाति पर सूर्य-पूजा थोपते हैं। न्याय का समापन "परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन" का प्रतिनिधित्व करता है, जो उसकी धर्मत्यागी कलीसिया पर भी लागू होता है और उसकी कलीसिया के बाहर के दुष्टों पर भी।

जब यीशु ने पहली बार नासरत की कलीसिया में अपनी सेवकाई आरम्भ की, तो उन्होंने अपनी सेवकाई, संदेश और कार्य को परिभाषित करने के लिए यशायाह अध्याय इकसठ का उपयोग किया, जिसमें परमेश्वर के प्रतिशोध के समय की पहचान भी शामिल थी। उनकी सेवकाई, संदेश और कार्य ने एक लाख चवालीस हजार की सेवकाई, संदेश और कार्य का पूर्वचित्रण किया, क्योंकि वे भविष्यवाणी के अनुसार मेम्ने का जहाँ कहीं भी वह जाता है, अनुसरण करते हैं।

प्रभु परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि प्रभु ने मुझे दीनों को शुभ समाचार सुनाने के लिए अभिषिक्त किया है; उसने मुझे टूटे हृदय वालों के घाव बाँधने, कैदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करने, और जो बँधे हुए हैं उनके लिए कारागार के द्वार खोलने को भेजा है; प्रभु के अनुग्रह के वर्ष और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन की घोषणा करने, सब शोक करने वालों को सात्वना देने; सिय्योन में शोक करने वालों के लिए यह ठहराने कि राख के बदले शोभा, शोक के बदले आनन्द का तेल, और उदासी की आत्मा के बदले स्तुति का वस्त्र दिया जाए; ताकि वे धर्म के वृक्ष, प्रभु का रोपण कहलाएँ, जिससे वह महिमा पाए। और वे प्राचीन उजाड़ स्थानों को फिर से बसाएँगे, वे पुराने खंडहरों को खड़ा करेंगे, और बहुत पीढ़ियों से उजड़े हुए नगरों की मरम्मत करेंगे। और परदेशी तुम्हारी भेड़-बकरियों को चराएँगे, और विदेशियों के पुत्र तुम्हारे हलवाहे और तुम्हारी दाख-बारी के रखवाले होंगे। पर तुम प्रभु के याजक कहलाओगे; लोग तुम्हें हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे; तुम अन्यजातियों का धन उपभोग करोगे, और उनकी महिमा में तुम अपनी बड़ाई करोगे। यशायाह 61:1-6.

यीशु अपने बपतिस्मा के समय अभिषिक्त हुए, और वह मार्ग-चिह्न 11 सितंबर, 2001 का प्रतीक है, जब पवित्र आत्मा का अभिषेक उन पर उतरने लगा जिन्होंने यह पहचाना कि अंतिम दिनों में अंतिम वर्षा का उंडेला जाना मिलराइटों के इतिहास द्वारा प्रतीकित किया गया था, जो वे पुराने उजड़े स्थान थे जिन्हें एक लाख चवालीस हजार फिर से बनाएँगे, जब वे यिर्मयाह के पुराने मार्गों पर लौट आएँगे।

1888 के विद्रोह से मसीह की धार्मिकता का संदेश फिर से वर्तमान सत्य बन गया, और 1888 के उसी विद्रोह से आया संदेश वह शुभ समाचार था जिसमें टूटे हुए हृदयों को बाँधने की शक्ति है, पर जो उन कठोर हृदयों को खोलने में असमर्थ है जिनकी आँखें तो हैं देखने के लिए, पर वे ग्रहण नहीं करते, और जिनके कान हैं सुनने के लिए, पर वे समझते नहीं। 1888 के विद्रोह से मसीह की धार्मिकता का वही संदेश लाओदिकिया के लिए भी था, जो तब फिर से आया ताकि जो पाप के बंदी थे, उनका कारागार-द्वार उस एक के द्वारा खोला जाए जिसके पास वे द्वार खोलने की शक्ति है जिन्हें कोई मनुष्य नहीं खोल सकता, और वे द्वार बंद करने की शक्ति है जिन्हें कोई मनुष्य बंद नहीं कर सकता।

11 सितम्बर, 2001 को, जिन्हें शुभ समाचार सुनाने थे, उन्हें प्रभु के अनुग्रह के वर्ष और परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन की भी घोषणा करनी थी। उसी समय प्रभु के अनुग्रह का वर्ष भी आरम्भ हुआ, और वह लाओदिकिया के किसी व्यक्ति के पश्चाताप को पूरी तरह स्वीकार करने के लिए तैयार है, जब तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के साथ परमेश्वर के प्रतिशोध का दिन आ न पहुँचे। तब उसका प्रतिशोध उस कलीसिया पर

प्रकट होगा जिसने अपनी सुधि लिए जाने के समय को जानने से इंकार किया, और उसी समय बाबुल की वेश्या पर क्रमिक न्याय भी आरम्भ हो जाएगा।

अपने स्वीकार करने के दिन वह सब शोक करने वालों को सांत्वना देने का वादा करता है, और यरूशलेम में जो शोक करते हैं, उनका चित्रण यहैजकेल अध्याय नौ में किया गया है। उनकी सांत्वना सांत्वनाकर्ता के द्वारा, उस अंतिम वर्षा के संदेश को ग्रहण करने से आती है जो तब उन पर उंडेली जा रही है। परंतु केवल तब जब वे उस वर्षा को पहचानें। एक बार जब वे सांत्वनाकर्ता को पा लेते हैं, और 'रेखा पर रेखा' की पद्धति से पुराने उजाड़ स्थानों के निर्माण का काम पूरा करते हैं—जैसा कि यशायाह के खंड में चित्रित है—अर्थात् पवित्र इतिहास के उजाड़ का प्रतिनिधित्व करने वाली भविष्यवाणी की रेखा को उस दूसरी भविष्यवाणी की रेखा पर रखना जो किसी उजाड़ को दर्शाती है। उस कार्य में वे अनेक पीढ़ियों के खंडहरों को फिर से खड़ा करते हैं। तब 'परदेसी' उन शोक करने वालों के प्रति प्रतिसाद देंगे, जिन्हें परदेशियों के देखने के लिए एक ध्वज के रूप में ऊँचा उठाया गया है।

मसीह द्वारा अपने कार्य और सेवकाई की घोषणा, जैसा कि यशायाह अध्याय इकसठ में प्रस्तुत है, एक लाख चवालीस हजार का कार्य और सेवकाई है। उस कार्य को पवित्र सुधार आंदोलनों में दर्शाया गया है, और 1989 में वह "अंत का समय" आ गया जिसका पूर्व के सभी "अंत के समय" पूर्वाभास कराते आए थे। जैसे दानिय्येल अध्याय आठ, पद चौदह—एक पद—मिलेराइट आंदोलन की नींव और केंद्रीय स्तंभ के रूप में पहचाना गया था, वैसे ही "फ्यूचर फॉर अमेरिका" आंदोलन की नींव और केंद्रीय स्तंभ जो पद है, वह दानिय्येल अध्याय ग्यारह, पद चालीस है। मिलेराइटों के लिए, केंद्रीय स्तंभ का प्रकाश उलाई नदी के दर्शन के प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया गया था, और "फ्यूचर फॉर अमेरिका" आंदोलन के लिए केंद्रीय स्तंभ का प्रकाश हिदेकेल नदी के दर्शन के प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

"जो प्रकाश दानिय्येल को परमेश्वर से मिला था, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। शिनार की महान नदियों उलै और हिदेकेल के किनारों पर उसने जो दर्शन देखे थे, वे अब पूरी होने की प्रक्रिया में हैं, और पूर्वकथित सभी घटनाएँ शीघ्र ही घटित होंगी।" Testimonies to Ministers, 112.

दो नदियों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए दोनों दर्शनों का प्रकाश आपस में जुड़ा हुआ है और अंतिम दिनों में साकार होता है। उनकी परस्पर 'कड़ी' मानवता और दिव्यता के सम्मिलन का प्रतिनिधित्व करती है, जो वही संदेश है जिसे सिस्टर वाइट बार-बार मसीह के संदेश के रूप में पहचानती हैं, इस संदर्भ में कि मानवता, जब दिव्यता के साथ संयुक्त होती है, तो पाप नहीं करती। वे दो नदियाँ उसी कड़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पूर्ण आज्ञाकारिता से कम कुछ भी परमेश्वर की अपेक्षा के मानक को पूरा नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी अपेक्षाओं को अस्पष्ट नहीं छोड़ा है। मनुष्य को अपने साथ सामंजस्य में लाने के लिए जो आवश्यक नहीं है, ऐसा कुछ भी उन्होंने आदेशित नहीं किया है। हमें पापियों को उनके चरित्र के आदर्श की ओर इंगित करना है और उन्हें मसीह के पास ले जाना है, जिनके अनुग्रह से ही इस आदर्श तक पहुँचा जा सकता है।

उद्धारकर्ता ने मानवता की दुर्बलताएँ अपने ऊपर ले लीं और निष्पाप जीवन जिया, ताकि मनुष्यों को यह भय न रहे कि मानव स्वभाव की कमजोरी के कारण वे विजय प्राप्त नहीं कर सकते। मसीह हमें 'ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी' बनाने आए, और उनका जीवन यह घोषित करता है कि दिव्यता से संयुक्त मानवता पाप नहीं करती।

उद्धारकर्ता ने इसलिए विजय पाई कि वह मनुष्य को दिखाए कि वह कैसे विजय पा सकता है। शैतान के सभी प्रलोभनों का सामना मसीह ने परमेश्वर के वचन से किया। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करके, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की शक्ति पाई, और प्रलोभक कोई बढ़त न ले सका। हर प्रलोभन के प्रति उनका उत्तर था, 'लिखा है।' इसी प्रकार, परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया है, जिससे हम बुराई का प्रतिरोध कर सकें। अत्यंत महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ हमारी हैं, ताकि इनके द्वारा हम 'दैवीय स्वभाव के सहभागी बनें, और संसार में वासना के कारण जो भ्रष्टता है उससे बच निकलें।' 2 पतरस 1:4.

प्रलोभित व्यक्ति से कहो कि वह परिस्थितियों की ओर, अपनी कमजोरी की ओर, या प्रलोभन की शक्ति की ओर नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन की शक्ति की ओर देखे। उसकी सारी शक्ति हमारी है। 'तेरा वचन,' भजनकार कहता है, 'मैंने अपने हृदय में छिपा रखा है, कि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।' 'तेरे होंठों के वचन के द्वारा मैंने अपने आपको विनाशक के मार्गों से बचाए रखा है।' भजन संहिता 119:11; 17:4. The Ministry of Healing, 181.

1798 और 1989 में ज्ञान की वृद्धि ने परमेश्वर के भविष्यसूचक वचन की मुहर खुलने का प्रतिनिधित्व किया। उसका वचन वह शक्ति प्रदान करता है कि हम वैसे ही विजयी हों जैसे वह हुआ, और "उसका जीवन यह घोषित करता है कि दिव्यता के साथ संयुक्त मानवता पाप नहीं करती।" उलाई नदी का दर्शन उसके प्रकट होने का मराह दर्शन है, जिसका प्रतिनिधित्व तेईस सौ दिनों की भविष्यवाणी द्वारा किया जाता है। हिदेकेल नदी का दर्शन भविष्यसूचक इतिहास का खाज़ोन दर्शन है, जिसका प्रतिनिधित्व पच्चीस सौ बीस वर्ष की भविष्यवाणी द्वारा किया जाता है। मराह दर्शन दिव्यता का और खाज़ोन दर्शन मानवता का प्रतिनिधित्व करता है।

प्राचीन शिनार की दोनों नदियाँ—ऊलाई और हिदेकेल, या जिन्हें आज टिग्रिस और यूफ्रेटीस के नाम से जाना जाता है—आखिरकार दक्षिणी इराक में शत्त अल-अरब जलमार्ग में मिल जाती हैं, और शत्त अल-अरब फिर फ़ारस की खाड़ी में जा मिलता है। यीशु आत्मिक को दर्शाने के लिए भौतिक और प्राकृतिक का उपयोग करते हैं, और उन दो नदियों से संबंधित दर्शन, जो अब पूर्ति की प्रक्रिया में हैं, मानवीय और दैवीय के बीच एक संबंध का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो तब घटित होता है जब नदियाँ समुद्र तक अपनी यात्रा के निष्कर्ष पर पहुँचती हैं। यह सत्य दानियेल अध्याय आठ, पद तेरह और चौदह के दो दर्शनों द्वारा प्रस्तुत दो भविष्यवाणियों की शुरुआत में स्थापित किया गया है। एक दर्शन प्रश्न है, दूसरा उत्तर, और तार्किक रूप से उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

मानवता का दर्शन, जो पवित्रस्थान और सेना के रैंदे जाने की पहचान करता है, 677 ईसा-पूर्व में आरंभ हुआ, और दैवत्व का दर्शन, जो मसीह के प्रकट होने की पहचान करता है, 457 ईसा-पूर्व में आरंभ हुआ। दैवत्व और मानवता का संबंध उन दो सौ बीस वर्षों की अवधि द्वारा निरूपित है, जो इन दोनों दर्शनों के आरंभ-बिंदुओं को जोड़ती है। दो सौ बीस "मानवता और दैवत्व के संबंध" का प्रतीक है, और यह 1798 में अंत के समय पर ज्ञान की वृद्धि को 1989 में अंत के समय पर ज्ञान की वृद्धि से जोड़ने वाले संबंध द्वारा भी निरूपित होता है।

1798 में ज्ञान में हुई वृद्धि से प्राप्त और औपचारिक रूप दिया गया संदेश पहली बार 1831 में मिलर द्वारा प्रस्तुत किया गया (और फिर 1833 में Vermont Telegraph समाचारपत्र में)। 1831, 1611 में किंग जेम्स बाइबल के प्रकाशन के दो सौ बीस वर्ष बाद था। किंग जेम्स बाइबल पुराने और नए नियम—दोनों का संयुक्त ग्रंथ थी। इन दो सौ बीस वर्षों की शुरुआत और समाप्ति ने एक दिव्य प्रकाशन को एक मानवीय प्रकाशन से 'जोड़ा'। मानवीय प्रकाशन की जानकारी उस दिव्य प्रकाश से निकली थी जिसकी मुहर 1798 में 'अंत के समय' पर खोली गई, और फिर उसे एक मानवीय साधन के कार्य के माध्यम से औपचारिक रूप दिया गया, जिसने 1831 में उसे प्रकाशित करना शुरू किया। वह एक दिव्य प्रकाशन था, जिसमें दिव्य रूप से मोहरबंद संदेश था, जिसे बाद में मानवता ने खोल दिया, और तत्पश्चात एक मानवीय साधन द्वारा प्रस्तुत किया गया। ईश्वर के वचन में "publish" के रूप में अनूदित हिब्रू शब्द का अर्थ है पुकारना, आर्त पुकार करना, प्रसिद्ध होना, अतिथि, आमंत्रित करना, उल्लेख करना, नाम देना, उपदेश देना, घोषणा करना, उच्चारित करना, प्रकाशित करना। मिलर ने 1831 में अपना संदेश प्रकाशित करना शुरू किया, फिर 1833 में यह सचमुच Vermont Telegraph में प्रकाशित हुआ।

1989 में ज्ञान में हुई वृद्धि से व्युत्पन्न औपचारिकीकृत संदेश पहली बार 1996 में (The Time of the End पत्रिका में) प्रकाशित हुआ, 1776 की स्वतंत्रता की घोषणा (और तत्पश्चात 1789 में संयुक्त राज्य का संविधान) नामक दो पवित्र दस्तावेज़ों के प्रकाशन के दो सौ बीस वर्ष बाद। इन दो सौ बीस वर्षों की शुरुआत और समाप्ति दिव्यता को मानवता से जोड़ती है, और यह ऐसा 1776 से शुरू होने वाले दो दिव्य दस्तावेज़ों के प्रकाशन के माध्यम से करती है। जब 1989 में अंत के समय दानियेल की पुस्तक की मुहर खोली गई, तो एक मानवीय माध्यम के कार्य से

उत्पन्न औपचारिकीकृत संदेश 1996 में प्रकाशित हुआ। क्रम यह था: पहले एक दिव्य प्रकाशन, फिर मुहर का खुलना, और फिर एक मानवीय प्रकाशन।

अंत के दोनों समयों में, सत्य के तीन चरण पहचाने जाते हैं। दोनों की शुरुआत पहले चरण के रूप में एक दैवीय प्रकाशन से होती है, और अंतिम चरण में दैवीय संदेश की व्याख्या करने वाला एक मानवीय प्रकाशन होता है। बीच का चरण तब होता है जब यूदाह के गोत्र का सिंह उस विशेष इतिहास के लिए दैवीय संदेश की मुहर खोलता है, और उसके बाद एक मानवीय साधन का चयन करता है ताकि दैवीय दस्तावेज़ से मुहर खुलने पर प्रकट हुए उस प्रकाश को संकलित किया जा सके। जब मुहर खोली जाती है, तो ज्ञान में हुई वृद्धि को न समझने वाले दुष्टों द्वारा विद्रोह प्रकट होता है। इस प्रकार, दैवीय प्रकाशन का प्रतिनिधित्व हिब्रू वर्णमाला के पहले अक्षर द्वारा किया जाता है, ज्ञान में वृद्धि का प्रतिनिधित्व तेरहवें अक्षर द्वारा किया जाता है जहाँ विद्रोह प्रकट होता है, और उस इतिहास के लिए विशेष दैवीय संदेश के मानवीय प्रकाशन का प्रतिनिधित्व हिब्रू वर्णमाला के अंतिम अक्षर द्वारा किया जाता है, और साथ मिलकर ये तीनों अक्षर "सत्य" का अर्थ देते हैं।

ऊलाई और हिद्देकल नदियों के वे दर्शन, जो अब पूरा होने की प्रक्रिया में हैं, यह दर्शाते हैं कि अंतिम दिनों में दोनों नदियों से संबंधित ज्ञान में हुई वृद्धि एक होकर यह सिद्ध करती है कि दिव्यता और मानवता का संयोग पाप नहीं करता। दानीएल ने ऊलाई नदी के किनारे रहते हुए वह दर्शन प्राप्त किया जो 1844 में तेईस सौ वर्ष की भविष्यवाणी के समापन पर मसीह के प्रकट होने का प्रतिनिधित्व करता है।

और मैंने दर्शन में देखा; और ऐसा हुआ कि जब मैंने देखा, तब मैं शूशन में, राजमहल में था, जो एलाम प्रान्त में है; और मैंने दर्शन में देखा, और मैं ऊलाई नदी के किनारे था। दानियेल 8:2.

हिद्देकल नदी के किनारे रहते हुए दानियेल ने वह दर्शन प्राप्त किया जो भविष्यवाणी के इतिहास के पच्चीस सौ बीस वर्षों के दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है।

और प्रथम महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं महान नदी के किनारे था, जो हिद्देकल है। दानियेल 10:4.

तत्पश्चात् गब्रिएल ने चौदहवें पद में हिद्देकल नदी के खाज़ोन दर्शन का उद्देश्य बताया।

अब मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा; क्योंकि यह दर्शन अभी भी बहुत दिनों के लिए है। दानियेल 10:14.

उलाई नदी द्वारा दी गई दृष्टि मसीह के 'प्रकट होना' (दैवीत्व) का संकेत करती है, जब वे 22 अक्टूबर, 1844 को अचानक अपने मंदिर में आए। यह उस तिथि को 'दैवीत्व' के मिलेराइट्स (मानवता) के मंदिर में प्रवेश का प्रतिनिधित्व करती थी, क्योंकि Day of Atonement, अर्थात् 'at one-ment' का दिन, दैवीत्व और मानवता के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है। हिद्देकल नदी द्वारा दी गई दृष्टि यह बताती है कि अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों (मानवता) पर क्या घटित होगा।

"प्रकट होने" के दर्शन की शुरुआत 457 ईसा-पूर्व में हुई। यह 677 ईसा-पूर्व में आरम्भ हुई उस भविष्यवाणी अवधि के दो सौ बीस वर्ष बाद था, जो पवित्रस्थान और सेना के रौंदे जाने को निर्दिष्ट करती है। दो दर्शनों के आरंभ-बिंदु पर परस्पर जोड़े गए इन दो सौ बीस वर्षों का समापन उस "अद्भुत गणनाकर्ता" द्वारा चिह्नित किया गया, जो हबक्कूक 2:20 में "अद्भुत भाषाविद्" भी है।

परन्तु प्रभु अपने पवित्र मंदिर में हैं; समस्त पृथ्वी उसके सामने मौन रहे। हबक्कूक 2:20.

दो भविष्यवाणियों के आरंभ बिंदुओं द्वारा प्रारंभ में दर्शाई गई मानवता और दिव्यता के बीच की कड़ी उनके परस्पर समापन पर उस अध्याय और पद द्वारा पहचानी गई, जिसने यह वर्णन किया कि दिव्यता अचानक उस मंदिर में आ पहुँची, जिसे उसने 1798 में अंत के समय से शुरू होकर छियालीस वर्षों के दौरान निर्मित किया था, और जो

छियालीस वर्ष बाद 22 अक्टूबर, 1844 को समाप्त हुए।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को अपवित्र करे, तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है, और वह मंदिर तुम हो। 1 कुरिन्थियों 3:16, 17.

22 अक्टूबर, 1844 को, 'प्रकट होने' के दर्शन के अनुरूप, हबक्कूक ने यह पहचाना कि प्रभु अपने पवित्र मंदिर में थे। प्रभु ने उस मंदिर को, जो पच्चीस सौ बीस वर्षों तक नष्ट और रौंदा गया था, छियालिस वर्षों में फिर से खड़ा कर दिया था।

और उससे कह, सेनाओं का यहोवा यूँ कहता है: देख, वह पुरुष जिसका नाम 'अंकुर' है; वह अपने स्थान से अंकुरित होगा, और वह यहोवा का मंदिर बनाएगा। वही यहोवा का मंदिर बनाएगा; और वह महिमा धारण करेगा, और अपने सिंहासन पर बैठकर राज्य करेगा; और वह अपने सिंहासन पर याजक भी होगा; और उन दोनों के बीच मेल का परामर्श होगा। और वे मुकुट हेलेम, तोबिय्याह, येदायाह और सपन्याह के पुत्र हेन के स्मारक के रूप में यहोवा के मंदिर में रखे जाएँगे। और जो दूर-दूर के हैं वे आकर यहोवा के मंदिर का निर्माण करेंगे, और तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और यह तब होगा, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाणी को ध्यानपूर्वक मानोगे। जकर्याह 6:12-15.

यूहन्ना 2:20 में, मसीह द्वारा मंदिर शुद्ध किए जाने के बाद—जो सिस्टर व्हाइट के अनुसार मलाकी के तीसरे अध्याय की पूर्ति थी, जैसे कि 22 अक्टूबर, 1844 भी—वाचा का दूत अचानक अपने मंदिर में आया।

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, इस मंदिर को ढा दो, और तीन दिन में मैं इसे खड़ा कर दूँगा। तब यहूदियों ने कहा, इस मंदिर के निर्माण में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू इसे तीन दिन में खड़ा कर देगा? परंतु वह अपने शरीर के मंदिर के विषय में कह रहा था। यूहन्ना 2:19-20.

मलाकी अध्याय तीन की पूर्ति में, मसीह अपनी सेवा के प्रारम्भ में, यूहन्ना अध्याय दो में जब उन्होंने मंदिर को शुद्ध किया, तब अचानक अपने मंदिर में आ गए; यह घटना 22 अक्टूबर, 1844 का प्रतीक थी। यूहन्ना अध्याय दो में मसीह द्वारा मंदिर का शुद्धिकरण और 22 अक्टूबर, 1844 — दोनों ही मलाकी अध्याय तीन की पूर्ति थे। यूहन्ना के दूसरे अध्याय की बीसवीं आयत में हमें बताया गया है कि मानवीय मंदिर छियालिस वर्षों में बनाया गया था, और दिव्य मंदिर तीन दिनों में उठाया गया। मानवीय मंदिर केवल तब हबक्कूक का "पवित्र मंदिर" बनता है जब दिव्यता अचानक उसमें आती है, जैसा कि 22 अक्टूबर, 1844 को हुआ; क्योंकि दिव्यता से संयुक्त मानवता पाप नहीं करती। शिनार की दो महान नदियों के दर्शनों से यह सत्य प्रकट होता है कि दिव्यता के साथ संयुक्त मानवता पाप नहीं करती।

हम अगले लेख में डैनियल की पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय के चालीसवें पद पर अपना विचार-विमर्श जारी रखेंगे।

तुम भी, जीवित पत्थरों के समान, एक आत्मिक घर और पवित्र याजकता के रूप में बनाए जा रहे हो, ताकि आत्मिक बलिदान अर्पित करो जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य हों। 1 पतरस 2:5.